दृष्टिबाधित, मूकबधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों का सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन

*कमलेश यादव**

व्यक्ति अपने वातावरण से जो सूचनायें और ज्ञान अर्जित करता है उन्हीं की सहायता से उसमें समायोजित होने का प्रयास करता है। आँख और कान ऐसी महत्वपूर्ण ज्ञानेन्द्रियाँ हैं कि व्यक्ति द्वारा अधिकांश ज्ञान और सूचनायें इन्हीं के द्वारा प्राप्त की जाती है परन्तु जब यहीं ज्ञानेन्द्रियाँ अपना काम करना बन्द कर देती है तो मनुष्य अपने वातावरण सम्बन्धी अनेक क्रियाओं और सूचनाओं के ज्ञान से वंचित हो जाता है, परिणामस्वरूप उसे अनेक मनो–सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है और वह स्वयं के साथ तथा अपने वातावरण में मौजूद व्यक्तियों, वस्तुओं एवं क्रियाओं के साथ सामान्य लोगों की भाँति समायोजन स्थापित करने में कठिनाई महसूस करने लगता है।

दृष्टिबाधित एवं मूक–बधिर विद्यार्थियों के सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन का सामान्य विद्यार्थियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन का भारत में अत्यन्त अभाव है। विदेशी शोधकर्त्ताओं ने इन समूहों पर अनेक शोध किये है। अधिकांश अध्ययनकर्ताओं के निष्कर्ष स्पष्ट करते है कि दृष्टिहीन एवं मूक–बधिर विद्यार्थियों का समायोजन प्रारूप सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से खराब है। सोमर्स (1944) ने अपने अध्ययन में पाया कि दृष्टिहीन किशारों का व्यक्तिगत एवं सामाजिक समायोजन निम्न स्तर का है जिस पर उनके सामाजिक वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है। बार्कर (1953) ने बधिर होने की उम्र एवं उनके समायोजन में सम्बन्ध ज्ञात करने वाले 13 अध्ययनों का पुनरावलोकन करके यह निष्कर्ष निकाला कि कम उम्र में बधिर हो जाने वाले लोगों में समायोजन की समस्यायें अधिक होती हैं। विलियम्स (1981) एवं राम (1992) ने अपने अध्ययनों में पाया कि मूक–बधिर बच्चों का समायोजन प्रारूप दृष्टिबाधित एवं सामान्य बच्चों की तुलना में अत्यन्त खराब स्तर का है। इसी प्रकार बाला (1985) ने निष्कर्ष निकाला कि संवेगात्मक अस्थिरता, कठोरता, गम्भीरता, लिप्तता, अलगावपन, पराश्रिता एवं लज्जालुपन की प्रवृति सभी प्रकार के विकलांगों में पायी जाती है। स्टींसन एवं ह्वाइटमायर (1991) तथा थॉमस एवं अन्य (1996) ने अपने अध्ययनों के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि मूक–बधिर विद्यार्थी सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में अपने मूक–बधिर साथियों के साथ अधिक भावात्मक सुरक्षा महसूस करते है और वे इन्हीं के साथ सम्बन्ध बनाना अधिक पसन्द करते हैं। जॉन एवं अन्य (2006) ने निष्कर्ष निकाला कि दृष्टिबाधितों को सामान्य लोगों के साथ समायोजन स्थापित करने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। कुछ अध्ययनों के निष्कर्ष दृष्टिबाधित एवं मूक–बधिर विद्यार्थियों के अच्छे समायोजन से भी सम्बन्धित है जैसे–सतपथी एवं सिंघल (2003) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला है कि श्रवण बाधित बच्चे सामान्य बच्चों की तुलना में संवेगात्मक एवं सामाजिक दृष्टि से अधिक समायोजित हैं। इसी प्रकार का निष्कर्ष

* शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

ज्योथिल, एवं रेड्डी (1996) का था। राम (1992) ने दृष्टिबाधितों का समायोजन सामान्य बालकों से अच्छा पाया था।

दृष्टिबाधित एवं मूक बधिर विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित शोध अध्ययनों का भारत में अभाव तथा कुछ अध्ययनों के निष्कर्षों में मतभेद होने के कारण इस अध्ययन को करने का निर्णय किया गया। प्रस्तुत अध्ययन की सहायता से शोधकर्ता ने इस प्रश्न का हल खोजन का प्रयास किया है कि दृष्टिबाधित, मूक–बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों का समायोजन स्तर कैसा है? और इन समूहों के समायोजन (परिवार, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक) में क्या अन्तर है

अध्ययन के उद्देश्य:

1. दृष्टिबाधित, मूक–बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन प्रारूप में अन्तर ज्ञात करना।
2. दृष्टिबाधित, मूक–बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के परिवार, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन में अन्तर ज्ञात करना।

अध्ययन विधि:

प्रस्तुत अध्ययन के उ0प्र0 के वाराणसी, इलाहाबाद, गोरखपुर एवं लखनऊ जिलों के विशिष्ट एवं सामान्य विद्यालयों की हाईस्कूल कक्षाओं में अध्ययनरत 80–80 दृष्टिबाधित, मूक–बधिर एवं सामान्य (कुल–240) विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत दैव प्रतिदर्शन विधि से किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन के मापन के लिए सिंह, ए0के0 एवं सेन गुप्ता, ए0 (1987) द्वारा निर्मित हाईस्कूल समायोजन अनुसूची का उपयोग किया गया है। यह अनुसूची कक्षा–7 से 10 तक के विद्यार्थियों के घर, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक एवं विद्यालय में समायोजन का मापन करती है। इसमें प्रत्येक समायोजन क्षेत्र के लिए 30 एकांश (कुल 30X5=150 एकांश) हैं। इसकी विश्वसनीयता परीक्षण–पुनः परीक्षण विधि से 0.764 तथा विभक्तार्द्ध विधि से 0.825 है तथा वैधता 'बेल समायोजन अनुसूची' की सहायता से वैध पायी गयी है।

परिणाम एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन हेतु एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकी माध्य, मानक विचलन तथा निष्कर्षात्मक सांख्यिकी 'टी' परीक्षण की सहायता से किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षा का विवरण तालिका 1 से 6 में निम्नवत प्रस्तुत है:

सारणी–1 दृष्टिबाधित, मूक–बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन के प्राप्तांक का तुलनात्मक विवरण

समूह	माध्य	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	'टी' मूल्य
दृष्टिबाधित	81.156	18.424	दृष्टिबाधित बनाम मूक–बधिर	2.435**
दृष्टि बाधित	72.822	24.166	दृष्टि बाधित बनाम सामान्य	6.166**
मूक–बधिर	102.138	23.997	मूक–बधिर बनाम सामान्य	6.646'*

**0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी–1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्राप्त तीनों 'टी' मूल्य 0.01 स्तर पर सार्थक हैं अर्थात् दृष्टिबाधित, मूक–बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन प्रारूप में सार्थक अन्तर है। मूक–बधिर विद्यार्थियों का समूह दृष्टिबाधित एवं सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में सार्थकता की दृष्टि से सबसे कम समायोजित है, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का समायोजन मूक–बधिर विद्यार्थियों की तुलना में सार्थकता की दृष्टि से अच्छे स्तर का है परन्तु सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में खराब स्तर का हैं।

सारणी–2 दृष्टिबाधित, मूक–बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के घरेलू समायोजन संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक विवरण

समूह	माध्य	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	'टी' मूल्य
दृष्टिबाधित	18.308	4.183	दृष्टिबाधित बनाम मूक–बधिर	4.218**
दृष्टि बाधित	15.588	3.917	दृष्टि बाधित बनाम सामान्य	2.953**
मूक–बधिर	20.319	4.375	मूक–बधिर बनाम सामान्य	7.161**

**0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी–2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्राप्त तीनों 'टी' मूल्य 0.01 स्तर पर सार्थक हैं अर्थात् दृष्टिबाधित, मूक–बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के घरेलू समायोजन में सार्थक अन्तर है। मूक–बधिर विद्यार्थियों का समूह अन्य दोनों समूहों की तुलना में सार्थक दृष्टि से खराब घरेलू समायोजन रखता है, दृष्टिबाधित विद्यार्थी सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में खराब परन्तु मूक–बधिर विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक दृष्टि से अच्छे घरेलू समायोजन रखता है।

सारणी 3 दृष्टिबाधित, मूक–बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के स्वास्थ्य संबंधी समायोजन के प्राप्तांकों का तुलनात्मक विवरण

समूह	माध्य	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	'टी' मूल्य
दृष्टिबाधित	17.088	3.911	दृष्टिबाधित बनाम मूक–बधिर	0.834**
दृष्टि बाधित	17.609	3.937	दृष्टि बाधित बनाम सामान्य	6.013**
मूक–बधिर	20.953	4.165	मूक–बधिर बनाम सामान्य	5.156**

**0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी–3 यह प्रदर्शित करती है कि दृष्टिबाधित एवं मूक–बधिर विद्यार्थियों का समूह सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में स्वास्थ्य की दृष्टि से .01 स्तर पर सार्थक दृष्टि से कम समायोजित हैं। मूक–बधिर दृष्टिबाधितों की तुलना में अधिक समायोजित है परन्तु इनके बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी 4 दृष्टिबाधित, मूक–बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक विवरण

समूह	माध्य	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	'टी' मूल्य
दृष्टिबाधित	15.058	4.066	दृष्टिबाधित बनाम मूक–बधिर	2.297*
दृष्टि बाधित	13.546	4.207	दृष्टि बाधित बनाम सामान्य	7.292**
मूक–बधिर	20.129	4.656	मूक–बधिर बनाम सामान्य	9.324**

*0.05 स्तर पर सार्थक

**0.01 रतर पर सार्थक

सारणी–4 से स्पष्ट है कि मूक–बधिर विद्यार्थी दृष्टि बाधितों की तुलना में 0.05 रतर पर तथा सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में 0.01 स्तर पर सार्थक दृष्टि से निम्नस्तरीय सामाजिक समायोजन रखते हैं। इसी प्रकार दृष्टिबाधितों ने सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में 0.01 स्तर पर सार्थक दृष्टि से कम सामाजिक समायोजन का प्रदर्शन किया है।

सारणी 5 दृष्टिबाधित, मूक–बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक विवरण

समूह	माध्य	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	'टी' मूल्य
दृष्टिबाधित	14.245	4.127	दृष्टिबाधित बनाम मूक–बधिर	2.689**
दृष्टि बाधित	12.458	4.226	दृष्टि बाधित बनाम सामान्य	9.346**
मूक–बधिर	20.643	4.471	मूक–बधिर बनाम सामान्य	11.823**

**0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी–5 से स्पष्ट है कि मूक–बधिर विद्यार्थी, दृष्टिबाधित एवं सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में 0.01 स्तर पर सार्थक दृष्टि से कम संवेगात्मक समायोजन रखते हैं जबकि दृष्टि बाधित, संवेगात्मक समायोजन की दृष्टि से सामान्य विद्यार्थियों से कम परन्तु मूक–बधिर विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक दृष्टि से उच्च स्तर का संवेगात्मक समायोजन रखते हैं।

सारणी 6 दृष्टिबाधित, मूक–बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन समायोजन संबंधी प्राप्तांकों का तुलनात्मक विवरण

समूह	माध्य	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	'टी' मूल्य
दृष्टिबाधित	16.455	3.887	दृष्टिबाधित बनाम मूक–बधिर	4.446**
दृष्टि बाधित	13.619	4.131	दृष्टि बाधित बनाम सामान्य	5.373**
मूक–बधिर	20.092	4.593	मूक–बधिर बनाम सामान्य	9.312**

**0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी–6 से स्पष्ट है कि दृष्टिबाधित एवं मूक–बधिर विद्यार्थियों का दोनों समूह सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में 0.01 स्तर पर सार्थक दृष्टि से निम्न कोटि का शैक्षिक समायोजन रखते हैं। मूक बधिर विद्यार्थी दृष्टिबाधितों की तुलना में भी निम्न कोटि का शैक्षिक समायोजन रखते हैं।

परिणाम एवं व्याख्या :

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक निहितार्थ रखते हैं। दृष्टिबाधित एवं मूक–बधिर विद्यार्थी सर्वाधिक महत्वपूर्ण ज्ञानेन्द्रियों का अभाव रखते हैं। उनके प्रति समाज की अभिवृत्ति, पुनर्वास एवं उनकी देखभाल के लिए उपलब्ध संसाधन इत्यादि अनेक कारण हैं जो उनके समायोजन को प्रभावित करते हैं। मूक– बधिर विद्यार्थियों ने अन्य दोनों समूहों के तुलना में समायोजन के अन्य सभी आयामों पर निम्नकोटि के समायोजन का प्रदर्शन किया है। वे केवल स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन में दृष्टिबाधितों के साथ कोई सार्थक अन्तर नहीं रखते हैं। जहाँ तक दृष्टि बाधित विद्यार्थियों के समायोजन की बात है इन्होंने मूक–बधिर विद्यार्थियों की तुलना में तो स्वास्थ्य के अतिरिक्त अन्य सभी आयामों में अच्छे समायोजन का प्रदर्शन किया है परन्तु सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में मूक–बधिर विद्यार्थियों की भाँति ये भी निम्न कोटि का समायोजन रखते हैं। इसी प्रकार के निष्कर्ष सोमर्स (1944), बार्कर (1985), थॉमस एवं अन्य (1996), जॉन एवं अन्य (2006) तथा राम (1992) ने अपने अध्ययनों में प्राप्त किये हैं।

दृष्टिबाधित एवं मूक–बधिर विद्यार्थियों के कम समायोजित होने का कारण सम्भवतः यह हो सकता है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को अपने वातावरण में घूमने–फिरने का कम अवसर मिलता है तो दूसरी ओर मूक–बधिर विद्यार्थी मौखिक सम्प्रेषण करने में असमर्थ रहते हैं। सम्प्रेषण का अभाव मूक–बधिरों में अनेक सामाजिक एवं संवेगात्मक जटिलतायें उत्पन्न करता है जिससे वे कुण्ठा के शिकार हो जाते हैं जो उनके समायोजन को प्रत्येक स्तर पर नकारात्मक दृष्टि से प्रभावित करता है। दृष्टिबाधित आवागमन सम्बन्धी सीमाओं के कारण खेलने–कूदने एवं प्राकृतिक

वातावरण से सीधा सम्बन्ध बनाने में असफल रहते हैं इसीलिए सम्भवतः सामान्य की तुलना में कम समायोजित होते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

- जॉन. पी., हैन्सन, जे. एवं ओसीप्यूइक, डी (2006) ए पाजिटिव आउटलुक द हाउलिंग नीड्स एण्ड अस्प्रेशन ऑफ वर्किंग एज पिपुल विद बिजुअल इम्पेयरमन्ट्स, डिसएविलिटी एण्ड सोसाइटी, वाल्यूम 21(7),661–675
- बार्कर, आर.जी., राईट, बी.ए.,मेयरसन,एल एवं गोनिक M.R.(1953).एडजस्टमेण्ट टू फिजिकल हैण्डीकैप एण्डइलनेस, ए सर्वे ऑफ द सोशल–साइकोलॉजी ऑफ फिजिक एण्ड डिसएबिलिटी,(परि. संरक.) न्यूयार्क सोशल साइंस रिसर्च कौंसिल, बुल 55, P. 154.
- ज्योति, ए एण्ड रेड्डी, आई.वी.आर. (1996). ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ एडजस्टमेण्ट एण्ड सेल्फ कानसेप्ट ऑफ हियरिंग इमपेयरड एण्ड नार्मल चिल्ड्रेन, जर्नल ऑफ साइकोलॉजी रीसर्चेज, वाल्यूम 40, (1), 6–10.
- थामस, एन.के., माइकेल, एस.एस. एवं कोहली डब्ल्यू:(1996), सेल्फ परसेप्शन्स ऑफ सोसल रिलेशनशीप इन हियरिंग इम्पेयर्ड एडोलसेन्ट्स, जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 88, (1), 132–134.
- बाला, एम., (1985), ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ द मेण्टल मेक–अप एण्ड एजुकेशनल फैसिलिरीज फॉर फिजिकली हैण्डीकैप एण्ड नार्मल चिल्ड्रेन, पी.एच.डी.(एजु.) कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय 1985, (इन फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, 1983–88, वा. सेकेण्ड. एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली
- मेहता, ए.सी., (2007), एलीमेण्ट्री एजुकेशन इन इण्डिया, एनालिटिकल रिर्पोट 2005–06 नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशन प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन,न्यू दिल्ली पृ0 138–140.
- श्राम, पी.एस.(1992),जूनियर हाईस्कूल कक्षाओं में अध्ययनरत अंध, मूक–बधिर एवं सामान्य बालकों के समायोजन, व्यक्तित्व, स्वास्थ्य एवं समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, (शिक्षा), का.हि.वि.वि. वाराणसी.
- विलियम्स, के.एफ. (1981), ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेण्ट ऑफ द ब्लाइंड एण्ड द डेफ स्टूडेंट इन स्टैण्डर्ड V, VI, VII ऑफ स्पेशल स्कूल्स इन कर्नाटक, न्यू हारीजॉन कालेज ऑफ एजुकेशन, बंग्लौर.
- स्टिसन,एम.एण्ड व्हाइटमायर, के (1991), सेल्फ परसेप्शन ऑफ सोशल रिलेशनशीप अमंग हियरिंग इम्पेयर्ड एडोलसेन्ट्स इन इग्लैण्ड, जर्नल ऑफ द ब्रिटिश एसोसिएशन ऑफ टीचर्स ऑफ द डेफ, 15,104–114.
- सतपथी, एस. एवं सिंघल, एस.(2003), सोशल–इगोशनल एडजस्टमेण्ट ऑफ हियरिंग–इम्पेयर्ड एण्ड नॉन इम्पेयर्ड एडोलसेन्ट्स–ग्रेड एण्ड जेण्डर डिफरेन्सेस, जर्नल ऑफ साइकोलॉजी रिसर्चेज वाल्यूम 47 (1), 1–8v
- सिंह, ए.के. एवं सेन गुप्ता, ए. (1987), मैनुअल फॉर हाईस्कूल एडजस्टमेंट इन्वेन्टरी (HSAI), अंकुर साइकोलाजीकल एजेन्सी लखनऊ.
- सोमर्स, वीटा, एस.(1944), द इनप्लूएंस ऑफ पैरेन्टल एटीट्यूड एण्ड सोशल इनवायरमेंट ऑन द पर्सनैल्टी डेवलपमेंट ऑफ एडोलसेन्ट ब्लाइंड, न्यायार्कः अमेरिका फाउण्डेशन फॉर द ब्लाइंड.